Dr Sunita Kumari, Guest Asst Prof
Dept of H.Sc
SNSRKS College Saharsa

गृह-प्रबन्ध (व्यवस्था) के सिद्धान्त
(Principles of Home Management)

परिवारिक कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए परिवार के पास उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करते हुए गृह की व्यवस्था सम्भालना ही गृह-प्रबन्ध कहलाता है। पारिवारिक जीवन में प्रबन्ध की अत्यन्त आवश्यकता होती है। प्रबन्ध के अनुसार किया गया कार्य सरलता तथा शीघ्रता से पूर्ण हो जाता है। गृहिणी परिवार की धुरी होती है।

परिवार के कुशल व्यवस्थापन के लिए गृहिणी एक परिवार में संयोजक, आयोजक और निर्देशक का कार्य करती है। यह आवश्यक नहीं है कि परिवार के विभिन्न कार्यों को गृहिणी स्वयं अपने हाथ से करे। परिवार के कार्य गृहिणी स्वयं, परिवार के सदस्यों के सहयोग से या फिर परिवार में नौकर रखकर करे करते हैं। गृहिणी परिवार के सदस्यों का सहयोग ले या नौकर से काम कराए उसे उसको निर्देशन देने की आवश्यकता होती है। अंत में इसकी जिम्मेदारी गृहिणी पर ही होती है।

परिवार में अनेक प्रकार के कार्य होते हैं, जैसे- भोजन बनाना, घर की सफाई, बच्चों की देख-भाल, कपड़ों की सफाई, बच्चों की पढ़ाई, उनके मनोरंजन का प्रबंध, परिवार की आवश्यक वस्तुओं की खरीददारी, आय व्यय का लेखा रखना। गृहिणी को अपने इन जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए गृह-व्यवस्था करते समय गृह-व्यवस्था के सिद्धान्तों को ध्यान में रखना आवश्यक है। गृह-व्यवस्था के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :—

(A) परिवार की सुख समृद्धि के लिए आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति करना :—

परिवार की आवश्यकताओं को दो भागों में बाँट सकते हैं :—

(1) मनोवैज्ञानिक आवश्यकता
(2) आय व्यय में संतुलन रखना

(1) मनोवैज्ञानिक आवश्यकता :— ये वे आवश्यकताएँ हैं जो कि शारीरिक तथा मानसिक विकास दोनों के लिए आवश्यक है, इसमें भोजन, वस्त्र, मकान आदि आते हैं। किसी भी व्यक्ति की आवश्यक आवश्यकताएँ भोजन, वस्त्र और आवास होती है। गृहिणी का कर्तव्य है कि

वह परिवार के सदस्यों की उन आवश्यक आवश्यकताओं को उस सीमा तक पूरा करे कि आवश्यकताएँ उस सदस्य की कार्य क्षमता को बनाए रखे। यदि वे आवश्यकताएँ उस सीमा तक पूरी नहीं होती और सदस्यों की कार्य क्षमता में कमी आ जाती है तो सदस्य अशांत, चिड़चिड़े हो जाते हैं। परिवार की शांति समृद्धि बढ़ने की अपेक्षा कम हो जाती है।

(a) भोजन :- परिवार के प्रत्येक सदस्य को उसकी आयु, लिंग, कार्यशीलता के आधार पर संतुलित भोजन मिलना चाहिए।

(b) वस्त्र :- (i) मौसम के अनुसार परिवार के सदस्यों की कपड़े से संबंधित आवश्यकता। (ii) कपड़ों को सीना (iii) कपड़े के टिकाऊपन को बढ़ाने के लिए आवश्यक उपाय (धुलाई, स्टार्च, प्रेस आदि) (iv) फटे कपड़ों की मरम्मत तथा सुरक्षा।

(c) मकान :- (i) परिवार में कौन-कौन सी क्रियाएँ होती हैं जिन्हें एक साथ एक जगह किया जा सकता है।
(ii) मकान में स्वच्छ वायु और सूर्य के प्रकाश का प्रबंध हो।
(iii) मकान साफ सुथरा हो।

(d) घर का वातावरण :- (i) परिवार की सुख शान्ति के लिए परिवार के सदस्यों में आपसी समायोजन की आवश्यकता है तथा आपसी समायोजन के लिए परिवार का वातावरण, प्रेम, त्याग, सहानुभूति आदि मानवीय गुणों से युक्त होना चाहिए।
(ii) ये वे आवश्यकताएँ हैं, जिनके द्वारा मनुष्य के जीवन में थोड़ा नयापन आ जाता है। शारीरिक तथा मानसिक दोनों आराम बढ़ जाते हैं।

(2) आय व्यय में संतुलन रखना :— परिवार के विभिन्न कार्यों की धुरी परिवार की आर्थिक स्थिति है। परिवार के आय व्यय को संतुलित रखने का एक उपाय है - पारिवारिक बजट। पारिवारिक बजट परिवार की आय व्यय का संतुलित रूप होता है।

आय व्यय को संतुलित करने का दूसरा तरीका है - परिवार में आने वाले सामान की खरीददारी। किसी सामान को खरीदते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए — (i) परिवार के पास उपलब्ध धन को ध्यान में रखकर उसी के अनुसार महंगी- सस्ती वस्तु का चुनाव करना चाहिए। (ii) वे सामान जो कि प्रतिदिन नहीं खरीदे जाते, यथा- फर्नीचर, गर्म कपड़े, उन्हें खरीदते समय उन वस्तुओं के टिकाऊपन पर ध्यान देना चाहिए।

(iii) व्यापार के विषय में ज्ञान रखना चाहिए। कुछ वस्तु स्थान विशेष पर ही सस्ती मिलती है तथा कुछ वस्तुऐं ऐसी होती है जो समय विशेष पर सस्ती मिलती है।
(iv) आजकल भोज्य-पदार्थों में मिलावट बहुत अधिक होती है जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसलिए सामान ऐसी दुकान से खरीदना चाहिए जो कि विश्वसनीय हो। (v) परिवार का सामान जहाँ तक हो सके, फुटकर नहीं खरीदना चाहिए। विशेषकर रसोई के सामान फुटकर नहीं लेना चाहिए।

(3) गृह कार्यों में कुशलता :– परिवार के विभिन्न कार्य कुशलतापूर्वक संपन्न किये जाये इसके लिए निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है –

(a) योजना :– परिवार में होने वाले विभिन्न कार्यों के लिए योजना होनी चाहिए कि कौन-सा काम किस समय होगा। जब परिवार के काम योजनाबद्ध रूप से नहीं होते हैं तो गृहिणी किसी भी काम को ध्यान लगा कर नहीं कर सकती है और कार्य कुशलतापूर्वक नहीं होते।

(b) ज्ञान :– आँख बंद करके योजना की कल्पना कर लेना बहुत आसान है किन्तु उस काल्पनिक योजना के कुशल संचालन के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है। अनुभवों को प्राप्त करने के लिए उन कामों को करने की विधियाँ आनी चाहिए।

(c) परिवार का सहयोग :– गृह संचालन में गृहिणी की सबसे बड़ी कुशलता यही है कि वह परिवार के सब सदस्यों के सहयोग को प्राप्त कर सके। परिवार के सदस्यों का सहयोग प्राप्त करने के लिए परिवार के कार्यों के लिए बनाई गई योजना में परिवार के सब सदस्यों की राय लेनी चाहिए। इसके बाद जब परिवार के कार्यों को बाँटा जाता तो अलग-अलग सदस्यों को उनकी रुचि और योग्यता के अनुसार काम बाँटा जाये तभी उनका सहयोग प्राप्त होगा।